International Journal of Applied Research 2018; 4(1): 191-192

ISSN Print: 2394-7500
ISSN Online: 2394-5869
Impact Factor: 5.2
IJAR 2018; 4(1): 191-192
www.allresearchjournal.com
Received: 01-11-2017
Accepted: 02-12-2017

पूनम मिश्रा
प्राध्यापक (इतिहास) – शा. ठाकुर रणमत सिंह महाविद्यालय, रीवा (म.प्र.), भारत

विनय कुमार कुशवाहा
शोध छात्र (इतिहास) – शा. ठाकुर रणमत सिंह महाविद्यालय, रीवा (म.प्र.) भारत

Correspondence
पूनम मिश्रा
प्राध्यापक (इतिहास) – शा. ठाकुर रणमत सिंह महाविद्यालय, रीवा (म.प्र.), भारत

जबलपुर के शंकरशाह को कविता का दंड – एक विश्लेषण

पूनम मिश्रा एवं विनय कुमार कुशवाहा

सारांश
1857 केवल एक वर्ष नहीं है, अपितु अपने आप में एक सदी से भी बड़ा इतिहास है। हजारों वर्षो के इतिहास का एक युगांतकारी मोंड़ है, एक ऐसा अध्याय है जिसमें भूत, भविष्य और वर्तमान तीनों समाए है हम 1857 के बलिदानियों पर गर्व कर सकते है। सभी ज्ञात अज्ञात क्रांतिकारी जो देश के लिए शहीद हुए और जिन्होने जीवन भर क्रांति की ज्वाला को जलाए रखा जो कल थे आज है और भविष्य में भी अपने संस्कारो के कारण याद रखे जाएगें ऐसे ही शहीदों में एक नाम शंकरशाह व उनके पुत्र रघुनाथशाह का भी है जिन्होने 1857 के स्वाधीनता संग्राम में आदिवासियों व जनता में अंग्रेज विरोधी भावना को जगाया। अंग्रेजो ने उन्हें सिर्फ कविता करने पर तोप से उड़ा दिया। इसी का विवरण प्रस्तुत करने का प्रयास इस शोध पत्र के माध्यम से करने का प्रयास किया गया है।

कुट शब्दः शंकरशाह, सैनिक, क्रांतिकारी, जबलपुर

प्रस्तावना
वर्ष 1857 की महान सैनिक क्रांति विश्व इतिहास में महानतम है। यह वह समय था जब मेरठ की चिंगारी सम्पूर्ण भारत में दावानल बन रही थी। गांव–गांव, शहर–शहर और विशेषकर सैनिक छावनियों में अंग्रेजो को उखाड़ फेकने की योजनाएं बन रही थी। स्वाधीनता संग्राम के इस यज्ञ में जिन देशभक्तों ने अपने प्राणों की आहूति दी वह श्रृंखला बहुत लम्बी है उस श्रृंखला में अनेक राष्ट्रभक्त वनवासी भी है। इन्हीं में कभी न भुलाए जा सकने वाले नाम गोंड राजवंश के अंतिम दीपक शंकरशाह और उनके पुत्र रघुनाथशाह का है। शंकरशाह उस गढ़ा राज्य का वारिस था जो 16वीं सदी से अठारहवी सदी तक देश के मध्य भाग में फैला था यह वही गढ़ा राज्य था जिसकी यशोगाथा में रानी दुर्गावती के बलिदान की कहानी शामिल है। [1] इस समय शंकरशाह को अंग्रेजी शासन से पेंशन तथा 3 गांवों की जागीर प्राप्त थी राजा शंकरशाह जबलपुर के उपनगर पुरवा में रह रहे थे।

शंकरशाह और रघुनाथशाह ने 1857 के महासंग्राम में गुप्त रूप से सैनिको को क्रांति में भाग लेने के लिए प्रेरित किया उन्हें याद दिलाया कि उनका प्रथम कर्त्तव्य देश के प्रति है। धीरे–धीरे 52वीं रेजीमेंट के सैनिको में क्रांति की लहर उठी अपने क्रांतिकारी साथियों के साथ 52वीं रेजीमेंट के सहयोंग से राजा शंकरशाह ने अपनी योजना को अंतिम रूप दिया। [2] इसी वर्ष मोहर्रम के दिन विद्रोहियों की योजना थी कि अचानक धावा बोलकर केन्टोनमेंट में रह रहें अंग्रेज अधिकारियों को गिरफ्तार कर लिया जाए तथा खजाने को लूट लिया जाए, लेकिन दो गद्दार सैनिक जमादारो के कारण अंग्रेजो को सूचना मिल गयी मुहर्रम के दिन क्रांति नही हो सकी। सूचना पा कर डिप्टी कमिश्नर ने कथित षडयंत्र के संबंध में और अधिक जानकारी प्राप्त करने हेतु एक चपरासी को फकीर के वेश में राजा के पास भेजा। राजा शंकरशाह और उनके पुत्र फकीर के वेश में चपरासी को पहचान नही पाए। उन्होने अपने उद्देश्य और साधन, जिनके द्वारा वे कथित षडयंत्र को कार्यावित करना चाहते थे, बेफिक्र बता दिए। सूचना प्राप्त होने पर डिप्टी कमिश्नर ले. क्लार्क ने बीस सवारो और एक बड़े पुलिस दल के साथ 14 सितम्बर 1857 को राजा के भवन की ओर प्रस्थान किया। [3] जब राजा का राज भवन लगभग एक मील दूर रह गया तो डिप्टी कमिश्नर ले. क्लार्क कुछ सवारो को लेकर आगे बढ़ा और पूरे गांव को तब तक घेरे रहा जब तक कि पुलिस वहां नही पहुंच गयी। पुलिस ने वहां पहुंचकर राजा उसके बेटे रघुनाथशाह और करीब 14 लोगो को घर में बंदी बना लिया।

अंग्रेज वैसे भी किसी न किसी बहाने से शंकरशाह और उनके पुत्र रघुनाथशाह को दंडित करना चाहते थे अंग्रेजो को यह एक मौका मिला व उन्होने राजा के घर की तलाशी ली व उनके निवास से एक कविता जब्त की जिसे राजद्रोही करार दिया गया।

कविता लिखा हुआ कागज का टुकड़ा राजा शंकरशाह के घर में पलंग के पास पंखा रखने वाले रेशमी थैले में लेफ्टिनेंट क्लार्क के बीस सवारो एवं चालीस सिपाहियों के दल को 14 सितम्बर को हाथ लगा कागज के दूसरी ओर मेरठ में घटी विद्रोह की घटना के बाद की उद्घोषणा के कुछ अंश थे [4] इसमें राजा ने देवी की प्रार्थना लिखी थी जिसमें अंग्रेजी सरकार को खत्म करने, उसकी खुद की सरकार स्थापित करने के लिए देवी से सहायता की याचना की थी। इसी तरह की प्रार्थना उसके बेटे रघुनाथशाह की हस्तलिपि में भी मिली थी। वह प्रार्थना इस प्रकार थी :–

मुंद मुख डंडिन को चुगलौ की चबाई खाई
खुद डौर दुष्टन को शत्रु–संघारका
मार अंगरैज रेज कर देई मात चंडी
बचै नहि बैरि–बाल बच्चै संघरका
संकट की रक्षा कर दास प्रतिपाल कर
दीन की सुन आय मात कालिका
खायइ लै मलैछन को झेल नाहीं करौ अब
भच्छन कर ततछन घौर मत कालिका [5]

राजा शंकरशाह और उनके बेटे के बंदी बनाए जाने के बाद जबलपुर की स्थिति संकटपूर्ण हो गयी। दोनो को सैनिक जेल में रखा गया था गिरफ्तारी के अगले दिन सिपाहियों ने कैदियों को छुड़ाने का प्रयास किया। रात में लाइनों में गोली चलने की आवाज सुनाई दी और पास के एक मकान में आग लगा दी गई अंग्रेज अधिकारियों ने कैदियों के भाग लिकलने को असंभव बनाने के लिए अनेक पूर्वोपाय किए तथा कंपनी राज के विरूद्ध षडयंत्र करने के लिए उन पर मुकदमा चलाया गया [6] जांच करने वाले आयोग को जिनमें एक डिप्टी कमिश्नर और दो ब्रिटिश अधिकारी शामिल थे इन कैदियों को राजद्रोह का अपराधी ठहराने में कोई कठिनाई नहीं हुई। अंग्रेजो की सैनिक अदालत का न्याय एक नाटक था अदालत ने भीषण देशद्रोह रूपी कविता लिखने और कार्य करने के अपराध में राजा और उनके पुत्र को मृत्युदंड की सजा सुना दी। विश्व के इतिहास में साहित्य सृजन पर ऐसा अमानवीय अत्याचार कम ही देखने में आता है।

18 सितम्बर 1857 को जबलपुर में एजेंसी हाऊस के सामने फांसी परेड हुई। एजेंसी हाऊस के अहाते में दो तोपे लायी गयी इसके बाद राजा शंकरशाह और रघुनाथशाह को जेल से लाया गया। उनके चेहरो से दृढ़ता झलक रही थी राजा को देखने के लिए अपार जनसमूह का सैलाब उमड़ पड़ा था सैनिक उत्तेजित भीड़ को संयमित कर रहे थे। शंकरशाह और रघुनाथशाह की हथकड़िया और बेड़िया निकालकर उन्हें तोप के मुह पर बांध दिया गया। तोप के मुह पर बांधे जाने के समय शंकरशाह ने प्रार्थना की कि देवी उसके बच्चे की रक्षा करें जिससे वे अंग्रेजो से बदला ले सके। शीघ्र ही तोपचियों को तोप दागने की आज्ञा दे दी गयी। तोप चलते ही पिता पुत्र के अंग क्षत विक्षत होकर चारो ओर बिखर गए।

घटना स्थल पर उपस्थित एक अंग्रेज अधिकारी ने इस घटना का वृत्तांत दिया – वृद्ध पुरूष (जो मृत्यु के पहले कभी विचलित नहीं हुआ था) का और साथ ही युवा पुरूष (जिसकी आयु 40 वर्ष होगी) का चेहरा शांत और गंभीर था। उनके पैर और हाथ जो बांध दिए गए थे, तोप के मुह के पास पड़े थे और शरीर का ऊपरी भाग सामने की ओर लगभग पचास गज की दूरी पर जा गिरे थे। उनके चेहरों को जरा भी क्षति नहीं पहुंची थी, वे बिलकुल शांत थे। [7]

रानी ने अधजले अवशेष एकत्र कर उनके अंतिम संस्कार विधिवत पूर्ण किए। अंग्रेज शंकरशाह और रघुनाथशाह को तोप से उड़ा कर क्रांति की चिंगारी बुझाना चाहते थे लेकिन वह चिंगारी बुझी नहीं और धधक उठी। राजा शंकरशाह की विधवा रानी के नेतृत्व में संगठित सेना ने अंग्रेजो से डटकर युद्ध किया। अंग्रेजो की विशाल सैन्य बाहिनी के सम्मुख अपने को असमर्थ पा कर और वंश परंपरा के गौरव की रक्षा हेतु उस वीरांगना ने रानी दुर्गावती के समान कटार भोककर मृत्यु का वरण कर लिया। इस प्रकार हम देखते है, कि गोड राज्य की वंश परंपरा को जीवित रखते हुए शंकरशाह व रघुनाथशाह ने 1857 के संग्राम में अपने प्राणों की आहुति दी कविता पर मृत्युदंड देना अंग्रेजो का घृणित कार्य था अपने कार्यो व अंग्रेज विरोधी नीतियों की वजह से शंकरशाह व रघुनाथशाह इतिहास में अमर हो गए।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूचीं

1. मिश्रा, डॉ. सुरेश, मध्यप्रदेश के रणबांकुरे (2007), स्वराज संस्थान संचालनालय भोपाल, पृष्ठ 209
2. दबे, अनिल माधव, रोटी और कमल की कहानी (2008), स्वराज संस्थान संचालनालय भोपाल, पृष्ठ 81
3. मध्यप्रदेश संदेश, अगस्त 1987, पृष्ठ 88
4. मिश्रा, जयप्रकाश, मेहरा डॉ. प्रमोद, मध्यप्रदेश का इतिहास खण्ड–3 (2014), म.प्र. हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, पृष्ठ 600
5. मिश्र, द्वारिका प्रसाद, मध्यप्रदेश में स्वाधीनता आंदोलन का इतिहास (2002), स्वराज संस्थान भोपाल, पृष्ठ 86
6. सक्सेना सुधीर, मध्यप्रदेश में आजादी की लड़ाई और आदिवासी (2007), म.प्र. हिन्दी ग्रंथ अकादमी भोपाल, पृष्ठ 114
7. मिश्रा, डा.सुरेश, 19वीं सदी में भारत में आदिवासी विद्रोह (2008), स्वराज संस्थान संचालनालय भोपाल, पृष्ठ 239